व्याकरण
पद परिचय

कक्षा – दस

विषय - हिन्दी

पद परिचय (मोड्यूल १/२ , हैण्ड-आउट)

प्रस्तुतकर्ता:-

वेद प्रकाश शर्मा

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय , नरौरा

पद-परिचय को समझने से पहले शब्द और पद का भेद समझना आवश्यक है।

शब्द- वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।
शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई होते हैं जिनका अर्थ होता है।

पद – जब कोई शब्द व्याकरण के नियमों के अनुसार प्रयुक्त हो जाता है तब उसे पद कहते हैं।
उदाहरण-राम, पत्र, पढ़ना – शब्द हैं।
राम पत्र पढ़ता है।
राम ने पत्र पढ़ा-इन दोनों वाक्यों में अलग-अलग ढंग से प्रयुक्त होकर राम, पत्र और पढ़ता है पद बन गए हैं।
पद-परिचय- वाक्य में प्रयुक्त पदों का विस्तृत व्याकरणिक परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है।

व्याकरणिक परिचय क्या है?

वाक्य में प्रयोग हुआ कोई पद व्याकरण की दृष्टि से विकारी है या अविकारी, यदि बिकारी है तो उसका भेद, उपभेद, लिंग, वचन पुरुष, कारक, काल अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध और अविकारी है तो किस तरह का अव्यय है तथा उसका अन्य शब्दों से क या संबंध है आदि बताना व्याकरणिक परिचय कहलाता है।
पदों का परिचय देते समय निम्नलिखित बातें बताना आवश्यक होता है –

1. संज्ञा–तीनों भेद, लिंग, वचन, कारक क्रिया के साथ संबंध।
2. सर्वनाम-सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया से संबंध।
3. विशेषण-विशेषण के भेद, लिंग, वचन और उसका विशेष्य।

4. क्रिया-क्रिया के भेद, लिंग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य,धातु कर्म और कर्ता का उल्लेख।
5. क्रियाविशेषण-क्रियाविशेषण का भेद तथा जिसकी विशेषता बताई जा रही है, का उल्लेख।
6. समुच्चयबोधक-भेद, जिन शब्दों या पदों को मिला रहा है, का उल्लेख।
7. संबंधबोधक-भेद, जिसके साथ संबंध बताया जा रहा है, का उल्लेख।
8. विस्मयादिबोधक-हर्ष, भाव, शोक, घृणा, विस्मय आदि किसी एक भाव का निर्देश।

सभी पदों के परिचय पर एक संक्षिप्त दृष्टि –
सभी पदों को मुख्यतया दो वर्गों में बाँटा जा सकता है –

अ. विकारी
ब. अविकारी शब्द या अव्यय

अ. विकारी

इस वर्ग के पदों में लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण विकार आ जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियाविशेषण विकारी पद हैं।

1. संज्ञा- किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

	भेद		उदाहरण
1.	व्यक्तिवाचक संज्ञा	—	राम, आगरा, दिल्ली, गांधी जी, गंगा, हिमालय आदि।
2.	जातिवाचक संज्ञा	—	बालक, अध्यापक, शहर, नेता जी, नदी, पर्वत, सागर आदि।
3.	भाववाचक संज्ञा	—	बचपन, अपनापन, घृणा, प्रेम, मित्रता, मज़बूती, सफ़ाई आदि।

द्रव्य, पदार्थ, धातुएँ तथा समूह का बोध कराने वाले शब्द कक्षा, सेना, भीड़ आदि जातिवाचक संज्ञा के अंतर्गत आती हैं।

लिंग-संज्ञा के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष जाति का होने का पता चले, उसे लिंग कहते हैं; जैसे- बालक-बालिका।

भेद **उदाहरण**

पुल्लिंग — अध्यापक, सेवक, महाराज, कवि विद्वान, सम्राट, गायक आदि।

स्त्रीलिंग — अध्यापिका, सेविका, महारानी, कवयित्री, विदुषी, सम्राज्ञी, गायिका आदि।

ध्यान दें — राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, इंजीनियर, मैनेजर, सचिव, क्लर्क आदि का प्रयोग दोनों लिंगों के साथ किया जाता है।

वचन — संज्ञा के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं; जैसे—पुस्तक-पुस्तकें।

भेद **उदाहरण**

एकवचन — कलम, दवात, कुरसी, नारी, दवाई, घोड़ा, मटका, सड़क आदि।

बहुवचन — कलमें, दवातें, कुरसियाँ, नारियाँ,दवाइयाँ, घोड़े, मटके, सड़कें आदि।

ध्यान दें— भीड़, जनता, सेना, कक्षा आदि सदा **एकवचन** में और आँसू, बाल, दर्शन, हस्ताक्षर आदि **बहुवचन** में प्रयुक्त होते हैं।

कारक-वाक्य में संज्ञा आदि शब्दों का क्रिया से संबंध बताने वाला व्याकरणिक कोटि कारक कहलाता है।

	भेद	कारक-चिह्न (परसर्ग)	उदाहरण	
1.	कर्ता कारक	ने, अथवा कुछ नहीं	**राम** फल खाता है।	**सुमन ने** पत्र लिखा।
2.	कर्म कारक	को अथवा कुछ नहीं	वह **फल** खाती हो।	उसने **बच्चे को** मारा।
3.	करण कारक	से, के द्वारा	उसने **चाकू से** फल काटा।	यह सवाल **राम के द्वारा** हल किया गया।
4.	संप्रदान कारक	को, के लिए	किसान **गाय के लिए** चारा लाया।	उसने **भिखारी को** दान दिया।
5.	अपादान कारक	से (अलगाव), में, पर	गंगा हिमालय से निकलती है।	
			तालाब में कमल खिले हैं।	
				पेड़ पर पक्षी बैठे हैं।
6.	संबंध कारक	का, की, के, रा, री, रे	ये **राम की** पुस्तकें हैं।	
7.	संबोधन कारक	हे! अरे!	साथियो! मेरी बात ध्यान से सुनो।	अरे! सूरज निकल आया।

2. सर्वनाम- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे-मैं, हम, ये कुछ आदि।

	भेद		उदाहरण
1.	पुरुषवाचक सर्वनाम	—	मैं, मेरा, हम, तुम, वह, वे, उनका आदि।
	(*i*) उत्तम पुरुषवाचक	—	(बोलने वाला) — मैं, हम
	(*ii*) मध्यम पुरुषवाचक	—	सुनने वाला—तुम, आप
	(*ii*) अन्य पुरुषवाचक	—	(जिसके विषय में बात की जाए) — वह, वे
2.	निश्चयवाचक सर्वनाम	—	यह, ये, वह, वे
3.	अनिश्चयवाचक सर्वनाम	—	कोई, कुछ
4.	प्रश्नवाचक सर्वनाम	—	क्या, कौन, किसे, किसको आदि।
5.	संबंधवाचक सर्वनाम	—	जिसकी...उसकी, वह...जो, जैसी...वैसी आदि।
6.	निजवाचक सर्वनाम	—	खुद, स्वयं, अपने आप, स्वतः आदि।

3. विशेषण- संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं; जैसे-मीठा, परिश्रमी, काला, मोटा आदि।

	भेद		उदाहरण
1.	गुणवाचक विशेषण	—	रंगीन, हवादार, शांत, मौसमी, ठंडा, भव्य, विशाल, कुशल, आलसी।
2.	संख्यावाचक विशेषण	—	
	(क) अनिश्चित संख्यावाचक	—	कुछ, कई, अनेक, बहुत, से आदि।
	(ख) निश्चित संख्यावाचक	—	दस, पाँच, चौथा, चौगुना, दोनों, प्रत्येक आदि।
3.	परिमाणवाचक विशेषण	—	
	(क) अनिश्चित परिमाणवाचक	—	कम, थोड़ा, कुछ, अधिक, तनिक, ज़रा-सा आदि।
	(ख) निश्चित परिमाणवाचक	—	एक मीटर, पावभर, दो किलो, चार लीटर आदि।
4.	सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण	—	यह घर, ये छात्र, वह घर, वे कुरसियाँ आदि।